सहजयोग आज का महायोग

सहजयोग - अंतर्मन की आनंदमयी यात्रा

कस्तूरीमृग की कथा हम सभी ने सुनी है। उसकी नाभि में स्थित कस्तूरी की दिव्य सुगंध पूरे वन में फैलती है। वह स्वयं भी उस मनमोहक सुगंध का अनुभव करता है, किंतु यह नहीं जान पाता कि उसका स्रोत उसी के भीतर है। उस सुगंध की खोज में वह जंगल-जंगल भटकता है, दौड़ता है, थक जाता है, परंतु अंततः उसे वह बाहर कहीं नहीं मिलती।

मनुष्य की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। हम जीवन भर सुख, शांति, आनंद और संतोष को धन, पद, प्रतिष्ठा, परिवार, व्यवसाय और भौतिक उपलब्धियों में खोजते रहते हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं, फिर भी मन की गहराइयों में वह पूर्ण तृप्ति और स्थायी आनंद प्राप्त नहीं हो पाता जिसकी हमें तलाश रहती है।

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी जी बताती हैं कि जिस आनंद की खोज में मनुष्य संसार भर में भटकता है, उसका वास्तविक स्रोत उसके अपने ही भीतर, हृदय रूपी गुफा में स्थित है। सहजयोग के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने पर उसी दिव्य चेतना की यात्रा प्रारम्भ होती है और मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप का अनुभव करने लगता है।

श्रीमाताजी कहती हैं कि इस आंतरिक कस्तूरी की सुगंध का अनुभव तभी संभव है जब श्री गणेश जी की कृपा प्राप्त हो। श्री गणेश, जो पवित्रता, निष्कपटता और पृथ्वी तत्व के अधिष्ठाता हैं, साधक के भीतर निर्मलता और संतुलन स्थापित करते हैं। इस अनुभव का सबसे सरल और सहज माध्यम है–ध्यान।

ध्यान के विषय में श्रीमाताजी कहती हैं– 'सबसे पहले अपने आप को प्रेम से भर लो। यह जान लो कि मैं आपकी माँ हूँ और माँ होने का अर्थ है संपूर्ण संरक्षण। कोई भी बात गड़बड़ नहीं होने वाली। मेरी ओर अपने हाथ बढ़ाइए, धीरे-धीरे आँखें बंद कीजिए और अपने विचारों को देखिए। जैसे ही आप निर्विचार हो जाएँगे, वैसे ही आप अपने भीतर प्रवेश करने लगेंगे। आपको कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। '

वे आगे कहती हैं कि ध्यान प्रारम्भ करने से पहले हृदय से प्रार्थना करें– 'हे प्रभु! जिन्होंने मुझे कष्ट पहुँचाया, मैं उन सबको क्षमा करता हूँ। और मुझे भी क्षमा करें, क्योंकि मैंने भी जाने-अनजाने में अनेक लोगों को दुःख पहुँचाया है।' क्षमा का यह भाव हृदय को निर्मल बनाता है और प्रार्थना को सार्थक करता है।

आत्मसाक्षात्कार के पश्चात साधक का मिलन सर्वव्यापी चैतन्य शक्ति से हो जाता है। तब उसकी प्रार्थना केवल शब्द नहीं रहती, बल्कि अनुभव बन जाती है। सहजयोग में साधक धीरे-धीरे अपने भीतर स्वतः प्रसन्नता, संतोष, समाधान और आंतरिक सुरक्षा का अनुभव करने लगता है। यदि जीवन में कभी असंतुलन उत्पन्न भी हो, तो आत्मपरीक्षण के माध्यम से वह अपनी त्रुटियों को पहचानकर उन्हें सुधारने का प्रयास करता है। ध्यान से प्राप्त दिव्य आनंद उसे केवल स्वयं तक सीमित नहीं रखता, बल्कि दूसरों के जीवन में भी प्रकाश और शांति बाँटने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार सहजयोग व्यक्ति के व्यक्तित्व, चरित्र और आध्यात्मिक क्षमता के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। सहजयोग के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार का अनुभव करें और अपने भीतर स्थित उस दिव्य आनंद, शांति और प्रेम के स्रोत को पहचानें, जो सदैव से आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

मोबाइल पर ही मत बरस बदरा

तिरछी नज़र

गरमी और उमस से परेशान गरीबदास अपने मोबाइल पर मौसम देख रहे हैं। 35 डिग्री तापमान और आज रात से अगले पाँच दिनों तक वर्षा के आसार देखकर भी उनका मन खुश नहीं हो पा रहा है। खुश नहीं होने का कारण यह है कि यही भविष्यवाणी वे पिछले एक सप्ताह से देख रहे हैं। पिछले पाँच दिनों से रात से बरसात शुरू होने और अगले पाँच दिनों तक लगातार होने की भविष्यवाणी आ रही है। कहीं पूरी बरसात ही इसी तरह न निकल जाए। बरसात से और कोई लगाव नहीं था उन्हें। कोई खेती वेती तो करनी नहीं थी। नए जेनरेशन को तो शायद यही पता हो कि अनाज फैक्ट्री में बनती है और दुकानों में मिलती है। बस उमस और गरमी से राहत के लिए चाहते थे कि बदरा राहत बरसा दे। दुखी मन से वे सोचते कि पता नहीं बादलों को क्या परेशानी है। उमड़ते तो हैं, घुमड़ते भी हैं पर पता नहीं क्यों बरसने के स्थान पर कहीं और चले जाते हैं। क्या ऊंची-ऊंची बिल्डिंगें देखकर अवसादग्रस्त हो जाते हैं बादल? क्या उन्हें यह डर सताता है कि आने वाले वर्षों में उनकी ऊंचाई तक की बिल्डिंगें बन जाएंगी। क्या पेड़ों की कमी देखकर चिंतित हो जाते हैं। क्या उन्हें लगता है कि 'एक पेड़ माँ के नाम' लगाकर अनगिनत पेड़ सड़क के नाम या किसी प्रोजेक्ट के नाम काट दिए जाते हैं जिस देश में, उसमें बरसने की क्या जरूरत है। या हो सकता है कि पेड़ों का कद बिल्डिंगों के कद से कम देखकर कुपित हो जाते हों। या फिर यह सोचकर नहीं बरसते कि जरा सी बारिश कर दें तो हाहाकार मच जाएगा और वर्षा से निबटने के सरकारी दावों की पोल खुल जाएगी। सड़क पर नौका विहार और मत्स्य पालन और का आनंद लेने लगेंगे लोग? फिर उसे एंटी नेशनल घोषित कर दिया जाएगा। और फिर मोबाइल पर ही नहीं पेपर में भी बारिश की खबरें पढ़कर गरीबदास परेशान हो जाते हैं। पेपर में खबर छपती है कि शहर में इतनी बारिश हुई, उतनी बारिश हुई। पर शायद ही कभी बारिश होते देखी। उनके दिल से बादल के लिए यही आरजू निकल रही है कि मोबाइल पर ही मत बरसों बदरा, धरती को भी सराबोर करो।

विनय कुमार पाठक,वाटिका रोड, जयपुर 9001895412

जल भी शिप्रा का ही.....

मुख्यमंत्री मोहन यादव की पहल पर उज्जैन की पवित्र नदी अब सरकारी रिकॉर्ड में शिप्रा की बजाय शिप्रा हुई .-समाचार

टिप्पणी --उम्मीद है ,अब आने वाले सिंहस्थ में श्रद्धालुओं को शिप्रा में स्नान के लिए भी शिप्रा का पावन जल ही मिलेगा , नर्मदा को पाइप लाइनों से लाकर मिलाने की जरूरत न पड़े...!!

संजय डागा हातोद

सड़क यातायात : महती समस्या

हम रोज अखबारों में सड़क दुर्घटनाओं की खबरें पढ़ते है। कुछ सेकंड दुःख जताकर अगली खबर पर बढ़ जाते हैं। संपूर्ण भारत में सड़क हादसों को देखते हुए, इस पर गहन विचार विमर्श होना चाहिए। परंतु,सड़क यातायात हमारे यहां एक गौण विषय है। इस पर जितना ध्यान दिया जाना चाहिए,वह नहीं दिया जाता। जब की सड़क पर थोड़ी भी लापरवाही जान लेवा होती है।

भारत में युद्ध में उतने शहीद नहीं हुए,जितने एक साल सड़क हादसों अपनी जान गंवाते है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 2024 में कुल 4,87,707 सड़क हादसे हुए, जिनमें 1,77,175 लोगों की मौत हुई और 4,71,441 घायल हुए है। हर घंटे 20 लोगों की मौत।

प्रति दिन औसत 485 लोगों की मौत होती है। 2019 में मौत का औसत प्रति दिन 415 था।यह सिर्फ उस व्यक्ति और उसके परिवार की क्षति नहीं है। मृतकों में 66.4% हिस्सा 18-45 आयु वर्ग का है। जो कामकाजी मौत है।यह देश की भी क्षति है।सड़क दुर्घटनाएँ भारत के सकल घरेलू उत्पाद के 3% से अधिक का आर्थिक बोझ डालती हैं, जिसमें चिकित्सा लागत, आपातकालीन प्रतिक्रिया और उत्पादकता हानि शामिल हैं। जिसकी कीमत कई करोड़ रु में जाती है।

स्टॉकहोम डिक्लेरेशन (2020) के तहत भारत की प्रतिबद्धता के अनुसार, केंद्र सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं में 50% की कमी लाना है, हालाँकि वर्तमान प्रवृत्तियाँ और संस्थागत चुनौतियाँ इस लक्ष्य की प्राप्ति में गंभीर बाधाएँ उत्पन्न कर रही हैं।

2030 तक सड़क दुर्घटनाओं में 50% कमी लाना,एक बहुत मुश्किल कार्य है। जैसा कि मैंने शुरू में लिखा है कि यह एक गौण विषय है।हमारी प्राथमिकता में नहीं है। इसके लिए हमें उपाय करने होंगे।

सबसे पहले माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को नागरिक शास्त्र पढ़ाया जाना चाहिए,जिसमें सड़क यातायात भी हो। कम उम्र में सिखाई गई बातें ताउम्र याद रहती है। कम उम्र में बच्चों पर यातायात संस्कार होंगे। बड़े होकर वे नियमों का पालन करेंगे।

सड़क हादसों में पैदल यात्रियों की संख्या भी बहुत होती है। हमें बताया गया है कि सड़क के बायी ओर चलना चाहिए। वाहन भी बांयी ओर चलते है।पैदल यात्रियों को दांयी ओर चलना चाहिए, जिससे सामने से टक्कर के समय बचा जा सकता है। इससे हादसों में कमी आकर मौतों को टाला जा सकता है।

आपके साथ आपके बच्चे हैं,तो माता-पिता का कर्तव्य है कि यातायात नियमों का पालन करें। अन्यथा आपको नियम तोडते देखकर बड़े होकर बच्चें आपका अनुसरण करेंगे।

एक महत्वपूर्ण फैक्टर यह है कि हम भारतीयों में नागरिकता बोध की कमी है। हमारी सुरक्षा के लिए बनाये नियमों का हम ही उल्लंघन करते है। सीट बेल्ट हमारी सुरक्षा के लिए है,परंतु हम बेल्ट न बांधने में गौरव समझते है। ट्रैफिक जाम हो,फिर भी गर्दन के नीचे मोबाईल दबाकर हम बात करेंगे। यातायात संकेतों का पालन न करना, स्वयं के साथ-साथ दूसरों की भी जान खतरे में डालते है। मूलभूत कमी यह है कि हम डंडे की बात मानते हैं। पुलिस को देखकर हम नियम पालन करते है। हम यह समझते नहीं कि नियमों को तोड़ना,असभ्यता का प्रतीक है। विकसित देशों में पुलिस की अनुपस्थिति में भी कोई नियम नहीं तोडता।

ट्रैफिक नियमों के पालन से न सिर्फ हादसे कम होंगे, बल्कि कुछ मात्रा में ट्रैफिक जाम से राहत मिलेगी। जाम से राहत मिलने पर ईंधन की बचत होगी तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी आकर पर्यावरण की मदद होगी।

अब यही समय है कि यातायात के लिए एक अभियान निरंतर चलाया जाए। अभियान में सामाजिक संगठनों को भी शामिल करना चाहिए।

हम सभी यह प्रण करें कि हम यातायात नियमों का पालन करेंगे। हमारे मित्रों और परिचितों से आग्रह करेंगे कि नियमों का पालन करें।

नितिन पोल उज्जैन

डॉक्टर साहब का ऑल-इन-वन साम्राज्य

कभी डॉक्टर को भगवान का दूसरा रूप कहा जाता था। आजकल लगता है कि भगवान भी सोच रहे होंगे– 'इतने विभाग तो मेरे स्वर्ग में भी नहीं हैं! 'अब अस्पताल में जाइए। पहले डॉक्टर मिलेंगे, फिर उसी भवन में मेडिकल स्टोर मिलेगा। दवाइयाँ भी वहीं से लीजिए। फिर सामने पैथोलॉजी लैब है–खून, पेशाब, एक्स-रे, सीटी, एमआरआई, सब एक ही छत के नीचे। ऊपर कैंटीन है, जहाँ इलाज से पहले और बिल देखने के बाद चाय पीकर होश संभाल सकते हैं।अब तो लगता है कि भविष्य में अस्पताल के बाहर बोर्ड लगेगा– 'स्वागत है। जन्म से लेकर मृत्यु तक की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था यहीं उपलब्ध है। 'डॉक्टर साहब का सपना भी बड़ा है। मरीज अंदर आए तो बाहर तभी जाए, जब हर विभाग का आशीर्वाद ले चुका हो। दवा भी हमारी, जाँच भी हमारी, कैंटीन भी हमारी, पार्किंग भी हमारी। अगर संभव हो तो अस्पताल के सामने एटीएम भी हमारा और बैंक भी हमारा!

सुना है अब अगला विचार यह है कि मरीजों के लिए AMC (Annual Maintenance Contract) शुरू कर दिया जाए।

'गोल्ड पैकेज - साल में चार बार बीमारी।प्लैटिनम पैकेज - बीमारी हो या न हो, चेकअप अनिवार्य।डायमंड पैकेज - डॉक्टर साहब का जन्मदिन मुफ्त में मनाइए, बाकी सब सशुल्क। 'मरीज सोचता है कि वह इलाज कराने आया है, लेकिन धीरे-धीरे उसे एहसास होता है कि वह किसी शॉपिंग मॉल में प्रवेश कर चुका है।

कभी डॉक्टर की पहचान स्टेथोस्कोप से होती थी, आजकल कई जगह पहचान बिलिंग काउंटरों की संख्या से होने लगी है। चिकित्सा सेवा और व्यापार की रेखा इतनी धुंधली हो गई है कि मरीज को समझ नहीं आता कि उसका इलाज हो रहा है या उसका 'कस्टमर एक्सपीरियंस' बेहतर बनाया जा रहा है।धन कमाना कोई अपराध नहीं है। हर पेशेवर को अपने ज्ञान और परिश्रम का उचित पारिश्रमिक मिलना चाहिए। लेकिन जब सेवा का उद्देश्य पीछे छूट जाए और लाभ कमाने की दौड़ सबसे आगे निकल जाए, तब समाज प्रश्न पूछने लगता है।ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ लोगों की इच्छा केवल अच्छा जीवन जीने की नहीं, बल्कि इतना धन इकट्ठा करने की है कि मानो वे दो-चार हजार वर्ष तक जीवित रहने वाले हों। मानो बैंक बैलेंस ही अमरत्व का प्रमाणपत्र है। लेकिन इतिहास गवाह है–न सिकंदर अपना खजाना साथ ले गया, न कोई उद्योगपति, न कोई सम्राट।

आखिरि में प्रश्न वही है–

क्या अस्पताल सेवा का मंदिर रहेगा या कारोबार का महल बनेगा?

क्या मरीज इंसान रहेगा या ग्राहक बनकर रह जाएगा?

शायद समय आ गया है कि चिकित्सा जगत फिर से अपने

मूल मंत्र को याद करे– 'धन आवश्यक है, पर सेवा सर्वोपरि।

लाभ कमाइए, पर विश्वास मत खोइए। '

यही किसी भी चिकित्सक की सबसे बड़ी कमाई है।

डॉ. अजय शुक्ला

मंदिरों में चोरी/घोटाले अंदरखाने में भी बाहरी चोर भी चिंतनीय

.अयोध्या का राम मंदिर हो या मुंबई का सिद्धिविनायक, गुजरात का अम्बाजी हो या भरतपुर राजस्थान का बिहारी जी मंदिर अथवा अन्य प्रदेशों के मंदिर. मंदिरों में बढ़ती चोरियां चिंता का विषय बनती जा रही है. जितने भी बड़े मंदिर हैं वहां सरकारी नियंत्रण भी है. जबकि छोटे-छोटे- मंदिरों में निजी व्यवस्थायें। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि बाहरी चोरों पर तो गार्ड/पुलिस निगरानी करके नियंत्रण किया जा सकता है. किन्तु जब मंदिर के अंदरखाने में ही चोर व्याप्त हो तब उन्हें नियंत्रित करना और किसी पर एकदम अविश्वास करना कितना कठिन काम है. हालांकि सभी बड़े मंदिरों में सीसीटीवी, गार्ड्स और मंदिर के ट्रस्टीज निगरानी करने में हमेशा सतर्क व सहयोगी रहते हैं. इसके बावजूद भारी मात्रा में सोना-चांदी आभूषण, नगदी और अन्य कीमती मूर्तियां/वस्तुएं चोरी होना निश्चित रूप से अफसोसजनक ही है. क्योंकि जब रक्षक ही भक्षक बन जाए, बागड़ ही खेत खाने लगे, घर के जिम्मेदार ही चोरी में शामिल हो जाएँ तब मंदिर की रखवाली/देखरेख किसके भरोसे छोड़ी जाए ? क्या भगवान् को भी भगवान भरोसे ही छोड़ा जाए ? **शकुंतला महेश नेनावाइंदौर (म.प्र.)....फोन... 0731-4046326.**

आईने में छिपा सच

हताश आरव को नौकरी की कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी।उसे ये भाई-भतीजा वाद अच्छे से समझ आने लगा था।आज भी एक साक्षात्कार के लिए जाना था।निराश आरव आईने के सामने खड़ा हुआ जहां उसे अपना हारा हुआ अक्स दिखाई देता है।आईने से पूछता है- 'जिनके पास पैसा,पहचान नहीं वो क्या करें?आईना- 'मैं आत्मविश्वास से भरे आरव के चेहरे को जानता हूं,पर उसमें निराशा की परतें चढ़ने लगी है जो दृढ़ इच्छा शक्ति से हट सकती है।आरव- 'तुम सच कह रहे हो मैं खुद को हारने नहीं दूंगा '।

कविता अर्गल इंदौर (मध्य प्रदेश)

प्याज़

आज प्याजी रंग की कुर्ती पहनी थी कुछ ने कहा ये रंग आप पर बहुत फबता है यह रंग सादगी और ऊर्जा का संगम है ,इसमें चमक है ।उर्दू में लिखें तो प्यार(?) और प्याज़ (?)में सिर्फ एक नुक़्ते भर का अंतर है पर समानताएँ बहुत जैसे प्रेम की बहुत परतें होती हैं जो हमें ज़िंदगी की सर्द हवाओं में बुने हुए स्वेटर की तरह गर्माहट देती रहती हैं वैसे ही प्याज़ भी कई परतों में कुछ कुछ आम इंसान-सा है जितना सूखा उतना परिपक्व।

इतिहासकारों की माने तो सेंट्रल एशिया के भूखंड से प्याज़ पूरे विश्व को मिला यह हर खाने का अभिन्न अंग बना और सबको अपना बनाता चला गया किसी किसान की सूखी रोटी का साथ देने वाला, गर्म लपटों से बचाने वाला, महंगे सलाद में स्वाद भरता तो कभी कॉकटेल्स के साथ अनियन रिंग्स के रूप में इठलाता प्याज़ पहले स्वछंद था प्रेम सा, जो भोजन को अधिक सुखद बना देता था फिर प्रेम की तरह इसकी भी जमाखोरी होने लगी छुपाकर रखा जाता , ताकि कमी महसूस हो और ऊँचे दाम में बिक सके अब माँसाहार हो या शाकाहार , प्याज़ के बिना कोई थाली कभी पूरी नहीं होती हाँ किन्हीं विशेष अवसरों में इसको निष्कासित किया गया है जैसे कथित लोकतंत्र में जनता को किया जाता है राजनीति में राजा होते हैं और उनका भाषण निर्धन की रोटी की बात करता है, मध्यम वर्गीय प्याज़ की नहीं असमय मौसमी बदलाव के चलते ये छोटे शहर से बड़े शहर चल देता है इंटरनेशनल-नुमा शिक्षा संस्थानों के गोदामों से निकल कर मल्टीनेशनल बोरियों में भरा जाता है और एक से काम आता है तला-भूना जाए तो और भी गुलाबी। सालाना एक दो ई-मेल और अवार्ड मिलते हैं, चर्चा होती है खुद पर गर्व की अनुभूति होती है दिसंबर में इसके ग्राहक हॉलिडे मनाते हैं, इसलिए दो-चार दिन इसे भी राहत मिल जाती है खैर प्याज़ अब महंगा होता चला है मालूम हुआ अब फिर सेंट्रल एशिया के देशों से 35000 टनों का निर्यात हुआ है जैसे घर से दूर रहने वाली पीढ़ी स्विगी पर निर्भर होने लगी है आजकल होटल वाले भी चार की जगह दो प्याज़ की स्लाइस आर्डर के साथ देने लगे हैंडॉर्स ट्रेडिंग के चलते होटल में ठहरने वालों को दोष दिया जाए या जलवायु परिवर्तन की ओर दुर्लक्ष करने वालों को छोड़िए, तीक्ष्ण गंध वाला ये कंद अपनी बू से बिछड़ नहीं सकता?सड़ जाए या गल जाए जड़ों से जुड़ा हुआ जो है

जूही गुप्ते पुणे(महाराष्ट्र)

स्टेलमेट : व्यवस्था से जूझती स्त्री की असमाप्त लड़ाई का दस्तावेज़

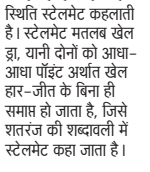

शतरंज के खेल में कभी-कभी ऐसी स्थिति आती है कि विपक्षी खिलाड़ी के राजा को चेक लगना बंद हो जाती है और उसके पास राजा को चलने की कोई जगह नहीं होती है। यह स्थिति स्टेलमेट कहलाती है। स्टेलमेट मतलब खेल ड्रा, यानी दोनों को आधा-आधा पॉइंट अर्थात खेल हार-जीत के बिना ही समाप्त हो जाता है, जिसे शतरंज की शब्दावली में स्टेलमेट कहा जाता है।

हमारे जीवन में भी कई अवसर आते हैं जब हमें ऐसी ही परिस्थितियों का सामना करना पड़ता अनेक बार व्यक्ति ऐसी परिस्थितियों में पहुँच जाता है जहाँ संघर्ष जारी रहता है, किन्तु समाधान दिखाई नहीं देता। सुप्रसिद्ध समीक्षक, लघुकथाकार और उपन्यासकार दीपक गिरकर का नवीन उपन्यास 'स्टेलमेट' इसी जीवन-सत्य को अपनी कथावस्तु का आधार बनाता है।

यह उपन्यास केवल एक स्त्री की व्यक्तिगत त्रासदी की कथा नहीं है, बल्कि हमारे समय की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और न्यायिक विसंगतियों का बहुआयामी दस्तावेज़ भी है। इसमें महिला सशक्तिकरण, जातिगत असमानता, सामाजिक समरसता, दिव्यांग बच्चों के प्रति समाज का दृष्टिकोण, शिक्षा व्यवस्था, सत्ता की राजनीति, न्याय व्यवस्था की जटिलता तथा धर्म की आड़ में पनपते पाखंड–इन सभी विषयों को कथा के भीतर स्वाभाविक रूप से पिरोया गया है।

उपन्यास का आरंभ श्रीमद्भगवद्गीता के प्रसिद्ध श्लोक–

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन... '

से होता है। यह श्लोक सम्पूर्ण उपन्यास का दार्शनिक आधार बन जाता है। नायिका माधवी निरंतर कर्म करती है, संघर्ष करती है, किंतु जीवन बार-बार उसे ऐसे मोड़ पर

खुलती जाती हैं। यह शिल्प पाठक की जिज्ञासा बनाए रखता है और कथा को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करता है।

माधवी का चरित्र इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि है। प्रारंभ में वह एक चंचल, निर्भीक और जीवन से भरपूर युवती लाकर खड़ा कर देता है जहाँ परिणाम उसके नियंत्रण से बाहर हो जाते हैं। इस प्रकार गीता का कर्मयोग उपन्यास के कथानक में जीवन्त रूप से प्रतिध्वनित होता है।

लेखक ने कथा-विन्यास के लिए फ्लैशबैक तकनीक का प्रभावी प्रयोग किया है। उपन्यास की शुरुआत एक सजायाफ्ता कैदी के रूप में माधवी से होती है और फिर उसके पूर्वजीवन की परतें क्रमशः खुलती जाती हैं। यह शिल्प पाठक की जिज्ञासा बनाए रखता है और कथा को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करता है।

माधवी का चरित्र इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि है। प्रारंभ में वह एक चंचल, निर्भीक और जीवन से भरपूर युवती के रूप में सामने आती है। कॉलेज जीवन में श्रीनिवासन से उसका प्रेम, जाति और सामाजिक स्तर के कारण दोनों परिवारों का विरोध, आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के बाद विवाह का निर्णय–ये प्रसंग केवल प्रेमकथा नहीं रचते, बल्कि आधुनिक भारतीय समाज में प्रेम, उत्तरदायित्व और सामाजिक समरसता का संतुलित दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते हैं। लेखक स्पष्ट संकेत देते हैं कि केवल प्रेम पर्याप्त नहीं; सफल वैवाहिक जीवन के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता और परिपक्व निर्णय भी उतने ही आवश्यक हैं।लेखक ने पारिवारिक जीवन के सुख-दुःख का अत्यंत संतुलित चित्रण किया है। पुत्र कार्तिक के जन्म का उल्लास और उसके बाद दिव्यांग पुत्री अनामिका का जन्म–दोनों प्रसंग जीवन के दो विपरीत छोरों को सामने लाते हैं।

अनामिका को शतरंज का प्रशिक्षण देना उपन्यास का अत्यंत महत्वपूर्ण कथानक है। लेखक ने शतरंज की बारीकियों को केवल खेल के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है।

माधवी का सार्वजनिक जीवन उपन्यास को नया आयाम देता है। परिस्थितिवश राजनीति में प्रवेश और शिक्षामंत्री बनने के बाद सरकारी विद्यालयों में सुधार, गरीब बच्चों की शिक्षा, निजी विद्यालयों की जवाबदेही तथा बालश्रम के विरुद्ध कठोर निर्णय, इन प्रसंगों के माध्यम से लेखक एक आदर्श जनप्रतिनिधि की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं। विशेष रूप से माधवी का यह कथन

उपन्यास अपने चरम पर तब पहुँचता है जब अनामिका के साथ घटित अमानवीय अपराध पूरी कथा का स्वर बदल देता है। इसके बाद पुलिस, प्रशासन, प्रभावशाली व्यक्तियों और न्यायिक प्रक्रिया का जो चित्र सामने आता है, वह पाठक को भीतर तक विचलित कर देता है।

'स्टेलमेट' मूलतः एक ऐसी स्त्री की कथा है जो व्यक्तिगत जीवन की त्रासदियों से आगे बढ़कर समाज, सत्ता, धर्म और न्याय व्यवस्था से प्रश्न करती है। यह उपन्यास पाठक को केवल भावुक नहीं करता, बल्कि सोचने के लिए बाध्य करता है। शतरंज के 'स्टेलमेट' को जीवन-दर्शन के रूप में रूपायित करना लेखक की मौलिक उपलब्धि है।है।

पुस्तक - स्टेलमेट (उपन्यास)
लेखक - श्री दीपक गिरकर
प्रकाशक - न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन सी-515, बुद्ध नगर, इंद्रपुरी, नई दिल्ली-110012
मूल्य - रु299/-
समीक्षक
सुरेश रायकवार 152ए, गोयल नगर, इंदौर